औपनिवेशिक काल में भारतीय रंगमंच पर टिप्पणी (Shot notes on Indian Theatre in the Colonial Period)

औपनिवेशिक काल (1757-1947) के दौरान भारतीय रंगमंच ने महत्वपूर्ण विकास किया। इस दौर में पारंपरिक लोक नाटकों के साथ-साथ आधुनिक थिएटर की शुरुआत हुई, जिसमें सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को अभिव्यक्ति मिली। ब्रिटिश शासन के प्रभाव से भारतीय नाट्य परंपरा में पश्चिमी शैली के तत्व भी जुड़े। कुछ महत्वपूर्ण रंगमंच :

- यूरोपीय थिएटर :

ब्रिटिश शासन से पहले भारत में संस्कृत नाटक (कालीदास, भवभूति आदि) और लोक नाट्य परंपराएँ (जैसे नौटंकी, तमाशा, कथकली, यक्षगान) प्रचलित थीं।

18वीं शताब्दी में ब्रिटिश अधिकारियों और व्यापारी वर्ग ने यूरोपीय थिएटर की शुरुआत की।

- कलकत्ता थिएटर'

1775 में कोलकाता में 'कलकत्ता थिएटर' की स्थापना हुई, जहाँ अंग्रेजी नाटक खेले जाते थे।1831 में हिंदू कॉलेज (कोलकाता) में 'द यंग बंगाल मूवमेंट' के तहत भारतीय थिएटर में आधुनिकता आई।

- बंगाली थिएटर

1850 के दशक में बंगाल में आधुनिक रंगमंच की शुरुआत हुई।

गिरिश चंद्र घोष, माइकल मधुसूदन दत्त और दीनबंधु मित्र जैसे नाटककारों ने सामाजिक मुद्दों को उठाया।

दीनबंधु मित्र का नाटक 'नील दर्पण' (1860) - नील किसानों पर ब्रिटिश अत्याचार को दर्शाता है।

- राष्ट्रीय रंगमंच (National Theatre):

1872 में राष्ट्रीय रंगमंच (National Theatre) की स्थापना हुई। औपनिवेशिक काल में राष्ट्रीय रंगमंच औपनिवेशिक काल में भारत में राष्ट्रीय रंगमंच का विकास एक जटिल प्रक्रिया थी। इस दौरान, भारतीय रंगमंच ने पश्चिमी रंगमंच से कई तत्वों को अपनाया, लेकिन इसने अपनी विशिष्ट पहचान भी बनाए रखी और अपनी स्वदेशी परंपराओं को भी बनाए रखा।भारतीय रंगमंच ने भारतीय नाटकों में लोक कथाओं, पौराणिक कथाओं और शास्त्रीय संस्कृत नाटकों के तत्वों का उपयोग जारी रहा।नाटकों में राष्ट्रीयता, देशभक्ति और सामाजिक सुधार के मुद्दों को उठाया गया जिससे राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ। 20वीं शताब्दी में भारतीय थिएटर राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रभावित हुआ। रामानंद चटर्जी, प्रदीप कुमार घोष और पृथ्वीराज कपूर जैसे कलाकारों ने थिएटर को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। 1943 में पृथ्वीराज कपूर ने 'पृथ्वी थिएटर' की स्थापना की, जो समाजिक और राजनीतिक नाटकों का मंचन करता था।

- मराठी थिएटर:

महाराष्ट्र में 19वीं शताब्दी में लोक नाट्य (तमाशा, कीर्तन) और सामाजिक थिएटर लोकप्रिय हुआ।गोविंदराव ताम्बे और बाल गंगाधर तिलक के प्रयासों से राष्ट्रवादी नाटक विकसित हुए।केशव पंडित, कृष्णाजी खाडिलकर जैसे नाटककारों ने समाज और राजनीति पर आधारित नाटक लिखे।'कीचकवध' (1907, खाडिलकर) नाटक को ब्रिटिश-विरोधी माना गया।

- हिंदी और उर्दू थिएटर

भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) को हिंदी रंगमंच का जनक कहा जाता है।

उनके नाटक 'अंधेर नगरी', 'भारत दुर्दशा' ब्रिटिश शासन की आलोचना करते थे।

आगा हश्र कश्मीरी ने उर्दू थिएटर को लोकप्रिय बनाया और पारसी थिएटर को बढ़ावा दिया।

- पारसी थिएटर

19वीं शताब्दी में पारसी समुदाय ने पारसी थिएटर की शुरुआत की, जिसमें भारतीय और पश्चिमी शैली का मिश्रण था। पारसी थिएटर में शेक्सपियर के अनुवाद, पौराणिक कहानियाँ, और

ऐतिहासिक नाटक प्रस्तुत किए गए। मुंबई, कोलकाता, लाहौर और लखनऊ में पारसी थिएटर लोकप्रिय हुआ।

निष्कर्ष

औपनिवेशिक काल में भारतीय रंगमंच ने पारंपरिक शैली से आधुनिक थिएटर तक का सफर तय किया। यह सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि सामाजिक सुधार, राष्ट्रवाद और ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष का मंच भी बना। इस दौर में विकसित रंगमंच ने स्वतंत्र भारत में नाट्य परंपरा को नई दिशा दी।